समानता (Equality)

समानता मूल रूप में समानीकरण की एक प्रक्रिया है। इसलिए प्रथमतः समानता का आशय विशेषाधिकारों के अभाव से है। द्वितीय रूप में इसका आशय यह है कि सभी व्यक्तियों को विकास हेतु पर्याप्त अवसर प्राप्त होने चाहिए। — हेरल्ड लास्की

वर्तमान समय में हम समाज में जिस प्रकार की असमानता देखते है, उस असमानता के कारण दो प्रकार के है। एक प्रकार की असमानता वह है जिसका मूल व्यक्तियों में प्राकृतिक भेद है। प्रकृति के द्वारा विभिन्न व्यक्तियों में बुद्धि, बल और प्रतिभा की दृष्टि से जो भेद किया जाता है और इस भेद के कारण जो असमानता उत्पन्न होती है, उसे प्राकृतिक असमानता कहते है। समाज में विद्यमान दूसरे प्रकार की असमानता वह है जिसका मूल समाज द्वारा उत्पन्न की गयी विषमताएं है अनेक बार बुद्धि, बल और प्रतिभा की दृष्टि से श्रेष्ठ होने पर भी कुछ वर्ग विशेष के बच्चे अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर पाते। राजनीति विज्ञान की एक धारणा के रूप में समानता का तात्पर्य सामाजिक वैषम्य द्वारा उत्पन्न इस असमानता के अन्त से है। इसका तात्पर्य यह है कि राज्य के सभी व्यक्तियों को व्यक्तित्व के विकास का समान अवसर दिए जाने चाहिए। लास्की के शब्दों में, समानता मूल रूप में समानीकरण की एक प्रक्रिया है।

बार्कर के शब्दों में, अधिकार के रूप में मुझे जिन स्थितियों की प्रत्याभूति की गई, उसी मात्रा में दूसरों को भी उनकी प्रत्याभूति की जाए, और जो अधिकार दूसरों को दिए जाएं वे मुझे भी दिए जाएं।

समानता के दो आयाम —

1. सकारात्मक आयाम में, समानता का अर्थ है सभी के लिए पर्याप्त अवसरों का प्रावधान। परन्तु इसका अर्थ मात्र सभी के लिए समान व्यवहार नहीं है, क्योंकि आवश्यकताओं तथा क्षमताओं के धरातल पर तथा अपने प्रयासों में भी व्यक्तियों में अन्तर होता है।

Avinash

2. नकारात्मक आयाम में, समानता का अर्थ है धर्म, जाति, वैभव, वंश, कुल, लिंग, विश्वास आदि के कृत्रिम आधार पर भेदभाव का न होना। यदि कोई वैध कारण हो तो भेदभाव किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, महिलाओं को अत्यंत भीषण कामों पर नहीं लगाया जा सकता। ऐसे मामले में लिंग के आधार पर भेदभाव समानता के सिद्धांत के प्रतिकूल न होगा।

- उदारवादियों के अनुसार, समानता वैधानिक होती है। अर्थात् व्यक्ति, कानून व नियमों के समक्ष समान माने जाएंगे।
- मार्क्सवादियों एवं समाजवादियों ने तात्विक समानता पर बल दिया, जिसमें रोजगार, अधिकारों, संपत्तियों का समानतापूर्ण वितरण एवं राज्य के नियंत्रण पर बल दिया।
- आधुनिक युग में समानता की संकल्पना को केन्द्रीय बनाने का श्रेय रूसो को दिया जाता है।
- समानता का अर्थ, समाज में विशेषाधिकारों एवं विषमताओं को समाप्त करना है।
- पुन: समानता का आशय, प्रत्येक प्रकार के विभेदों की समाप्ति नहीं, बल्कि अतार्किक विभेदों की समाप्ति है।
- समानता का आशय, सभी के साथ समान व्यवहार नहीं है। समानता का आशय, समान लोगों के साथ, समान व्यवहार करना एवं असमान लोगों के साथ, असमान व्यवहार करना समानता है।
- बेंथम ने पहली बार राजनीतिक समानता का सूत्र प्रस्तुत किया - एक व्यक्ति, एक मत।

Avinash

Scanned with CamScanner